IJAER/May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

आधुनिक राजनीति में सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ. आशा मीणा

सार

इंटरनेट के उदय के बाद से, कई लोगों को आश्चर्य हुआ है कि क्या सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म राजनीति को किस हद तक प्रभावित करते हैं। तदनुसार, साहित्य का एक बड़ा संग्रह है जो विभिन्न कोणों से सोशल मीडिया और राजनीति के बीच अंतरसंबंध की जांच करता है। विषय की जांच के लिए कई अलग–अलग तरीके सामने रखे गए हैं, और जरूरी नहीं कि ये तरीके एक–दूसरे के साथ संवाद करें परिणामस्वरूप, विषय के कारणों और परिणामों की जांच में कई अलग–अलग मोड़ आते हैं, और परिणाम हमेशा सुसंगत नहीं होते हैं। ऐसा कहने के बाद, हर कोई इस बात से सहमत हो सकता है कि इंटरनेट ने संपर्क की नई लाइनें खोल दी हैं, जिसने मीडिया के अधिक पारंपरिक रूपों की तुलना में समाचारों के प्रचार में काफी बदलाव किया है। भौगोलिक सीमाओं और सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपसमूहों से परे, सोशल मीडिया मल्टीमीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से समाचारों के वैश्विक प्रचार में एक आवश्यक भूमिका निभाता है यह परिस्थिति राजनीतिक समझ को कैसे बढ़ाती है, इसकी जांच इस अध्याय में की गई है यहां इस सवाल पर चर्चा की गई है कि सोशल मीडिया का राजनीति पर क्या और किस हद तक प्रभाव पड़ता है सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, हम चर्चा करते है कि कैसे इंटरनेट की परस्पर जुड़ी संरचना ने लोगों के लिए राजनीति में शामिल होना हमेशा आसान बना दिया है, और सोशल मीडिया के उदय के साथ यह प्रवृत्ति कैसे आगे बढ़ी है। हम इस चर्चा से शुरुआत करते है कि कैसे सूचना प्रसार से लोगों की राजनीतिक साक्षरता और, विस्तार से, राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी का स्तर बढ़ सकता है हम इस बात पर चर्चा करते है कि सोशल मीडिया इस प्रभाव को कैसे बढ़ा सकता है, राजनीतिक प्रवचन को आकार देने के लिए ऑनलाइन समुदायों की शक्ति का और विस्तार कर सकता है।

मुख्यशब्द – आधुनिक राजनीति, सोशल मीडिया, मल्टीमीडिया, प्लेटफार्मों

परिचय

सोशल मीडिया सहित किसी भी डिजिटल प्लेटफॉर्म का राजनीति के क्षेत्र पर प्रभाव है या नहीं, इसकी पहचान करने में रुचि इंटरनेट के उद्भव के बाद से काफी बढ़ गई है। इस बढ़ी हुई रुचि के साथ–साथ ब्याज की मात्रा में भी काफी वृद्धि हुई है। अब हम अनुसंधान के एक विकासशील निकाय पर निर्भर रहने में सक्षम हैं जो विभिन्न दृष्टिकोणों से सोशल मीडिया और राजनीति के बीच संबंधों की जांच करता है। यह इसी का नतीजा है कि ऐसा हुआ है. विषय वस्तु का पता लगाने के लिए जो दृष्टिकोण पेश किए जाते हैं उनका एक–दूसरे से अलग होना आम बात है, और हमेशा ऐसा नहीं होता है कि ये दृष्टिकोण एक–दूसरे के साथ बातचीत करते हैं। इसके अलावा, कारणों और परिणामों के अनुसंधान के लिए कभी–कभी मामले के बारे में निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए अन्य तरीकों के इस्तेमाल की आवश्यकता हो सकती हैं। साथ ही, इस बात पर भी सहमति है कि इंटरनेट के परिणामस्वरूप नए संचार चैनलों का उदय हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप आम तौर पर ज्ञात पारंपरिक मीडिया के विपरीत सूचना के प्रवाह में काफी बदलाव आया हैं सोशल मीडिया द्वारा कई प्लेटफार्मों पर समाचार प्रसारित करने की प्रक्रिया में एक बड़ी भूमिका निभाई जाती है, जिनमें सांस्कृतिक और मल्टीमीडिया दोनों ही शामिल हैं। राष्ट्रीय सीमाओं और राजनीति के क्षेत्र की सीमाओं के बाहर, यह उन सीमाओं से परे फैलता है। इस अध्याय में हमारी चर्चा

उन तरीकों पर केंद्रित होगी जिनसे यह विशेष स्थिति राजनीतिक क्षमता की वृद्धि में योगदान करती हैं यह अध्याय इस प्रतिमान के संदर्भ में इस सवाल की जांच करता है कि सोशल मीडिया राजनीति को प्रभावित करता है या नहीं, साथ ही यह किस तरीके से ऐसा करता हैं। अधिक विशेष रूप से, हम सबसे पहले उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिनसे इंटरनेट की नेटवर्क प्रकृति लोगों के लिए राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होना आसान बनाती है, साथ ही उन तरीकों पर भी ध्यान केंद्रित करेगी जिनमें सोशल मीडिया के आगमन के साथ यह परिदृश्य और भी बढ़ गया हैं विशेष रूप से, हम इस बारे में बात करेंगे कि कैसे इंटरनेट ने लोगों के लिए राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना आसान बना दिया हैं हम जांच करते है कि सोशल मीडिया इस प्रक्रिया को कैसे चलाता है और राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने और इसके परिणामस्वरूप, राजनीतिक जुड़ाव में सूचना प्रसार की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करके राजनीतिक क्षेत्र पर डिजिटल प्लेटफार्मों के प्रभाव को बढ़ाता हैं विशेष रूप से, हम जांच करते हैं कि सोशल मीडिया राजनीतिक भागीदारी के लिए उत्प्रेरक के रूप में कैसे कार्य करता है। अंत में, हम शोध प्रदान करते हैं जो दर्शाता है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का राजनीतिक विचार विमर्श पर क्या प्रभाव पड़ता हैं इस लेख में, हम उन तरीकों की जांच करते हैं जिनमें सूचना का वितरण राजनीतिक परिस्थितियों, प्रतिभागियों और राजनीतिक क्षेत्र में राजनीतिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है हम उन तरीकों पर विशेष ध्यान देते है जिनसे सोशल मीडिया राजनीति पर प्रभाव डालता हैं। प्रचार प्रसार के माध्यम के रूप में इसकी क्या भूमिका है? इसके अलावा, सामाजिक गतिशीलता का संचालन करना और उन्हें संगठित करना।

उद्देश्य

1– आधुनिक राजनीति में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन

2– राजनीति में सोशल मीडिया के उपयोग का अध्ययन

इंटरनेट और राजनीति

इंटरनेट राजनीतिक क्षेत्र को कैसे प्रभावित करता है, इस पर बहस इसके आगमन के बाद से योगदान से समृद्ध रही है 1990 के दशक में, इंटरनेट की इंटरैक्टिव संभावनाओं में रुचि रखने वाले विद्वानों ने इस क्षेत्र में अनुसंधान किया। इंटरनेट को अवसर के रूप में सराहा गया प्रत्यक्ष लोकतंत्र के आदर्श की प्राप्ति। यह भी तर्क दिया गया कि यदि इंटरनेट इस लक्ष्य तक पहुँचने में विफल रहा, तो राजनीति पर इसका प्रभाव न्यूनतम होगा। बताया गया कि इस परिदृश्य में प्रतिनिधि लोकतंत्र की स्थापित संस्थागत प्रक्रियाओं पर ध्यान नहीं दिया गया, जिन्हें गलती से अप्रचलित माना गया है हालाँकि, राजनीतिक संस्थानों, सरकारी प्रक्रियाओं में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की प्रारंभिक सीमित पहुंच और भौगोलिक क्षेत्रों एवं सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में इंटरनेट की कम पहुंच को देखते हुए, राजनीति पर इंटरनेट के प्रभाव को संबोधित करने वाली प्रारंभिक बहस अनुभवजन्य आधार की तुलना में अधिक सैद्धांतिक थी।

इंटरनेट के सार्वजनिक उपयोग के आगमन के बाद से, इस क्षेत्र में अनुसंधान की रूपरेखा और विकसित हुई है कैसे पर बहस राजनीति पर इंटरनेट का प्रभाव नाटकीय रूप से बढ़ गया है और, जैसा कि देखा गया है, इसका प्रभाव अब भाग्य के रूप में घोषित नहीं किया जाता है बल्कि अब अवलोकन द्वारा स्थापित किया जाता है आज हम अधिक अनुभवजन्य साक्ष्य पर भरोसा कर सकते हैं राजनीति में इंटरनेट के उपयोग के प्रभाव से बहस को और अधिक सामग्री मिलती है अध्ययनों ने बीच संबंधों का पता लगाया विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की एक विस्तृत श्रृंखला से इंटरनेट और राजनीति। विद्वानों ने इस बात पर जोर दिया कि इंटरनेट नागरिक जुड़ाव विकसित कर सकता है आत्मीयता समूहों के बीच संबंध बनाकर उन्हें नागरिकों के

लिए विशिष्ट राजनीतिक मुद्दों पर ज्ञान विकसित करने और कई दृष्टिकोणों की तुलना करने की क्षमता बढ़ाने में सक्षम बनाया गया है दूसरों की आत्म–अभिव्यक्ति को सक्षम करने तथा व्यक्तिगत और व्यक्तिगत संचार के प्रसार को सुविधाजनक बनाने में इंटरनेट की क्षमता में रुचि रही है स्थानीय दावे. इंटरनेट को नागरिकों और राजनीतिक संस्थानों को बेहतर ढंग से जोड़ने के साधन के रूप में राजनीतिक भागीदारी के नए रूप बनाने के अवसर के रूप में और अंततः, राजनीति पर चर्चा करने के लिए एक नए स्थान के रूप में भी सराहा गया है इन सभी नई स्थितियों को राजनीतिक भागीदारी बढ़ाकर लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए उपयोगी माना गया है

इंटरनेट से लेकर सोशल मीडिया तक

इंटरनेट अपनी शुरुआत से ही विकसित हुआ है और कई नए डिजिटल प्लेटफार्मों के उदय के कारण राजनीति पर इसका प्रभाव बदल गया है। पहले बुलेटिन बोर्ड सिस्टम (बीबीएस) से लेकर मोबाइल फोन के माध्यम से सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से जुड़े रहने की हमारी निरंतर क्षमता तक, आज इंटरनेट विभिन्न प्रकार के उपकरण प्रदान करता है जो राजनीति को प्रभावित करते हैं। यह विकास फिर अलग–अलग प्रभाव पैदा करता है, जिसके लिए शोधकर्ता तुरंत नए विश्लेषण प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया के आगमन ने लोगों को जोड़ने, उनकी निरंतर बातचीत और सहयोग की अनुमति देने, उनकी आवाज को व्यापक जनता तक पहुंचाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म की क्षमता में और क्रांति ला दी हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि सोशल मीडिया सूचनाओं और राजनीतिक समूहों के दावों को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। यह संचार का एक महत्वपूर्ण चैनल है जिसके माध्यम से राजनीतिक समुदाय या जनता के साधारण सदस्य के रूप में नागरिक अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं, विशिष्ट विषयों पर अपनी स्थिति का प्रचार कर सकते हैं, कई स्रोतों से आने वाली जानकारी साझा कर सकते हैं, साथ ही अपने आसपास के मुद्दों के बारे में रिपोर्ट कर सकते हैं।

इसलिए सोशल मीडिया को संबोधित करने एवं यह समझने के लिए उपयोगी है कि राजनीतिक समुदाय संचार के अपने चैनल बनाने और राजनीतिक ज्ञान के विकास में योगदान करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कैसे करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के प्रसार के माध्यम से पेश की गई इंटरनेट की नई अन्तर क्रियाशीलता क्षमता को वेब 2-0 की परिभाषा में वर्णित किया गया हैं। यह वेब की सात मुख्य विशेषताओं के आसपास समूहित है वेब एक मंच के रूप में, सामूहिक दोहन इंटेलिजेंस, डेटा इंटेल इनसाइड है, श्सॉफ्टवेयर रिलीज चक्र का अंत, हल्के प्रोग्रामिंग मॉडल, एकल डिवाइस के स्तर से ऊपर का सॉफ्टवेयर, और समृद्ध उपयोगकर्ता अनुभव।

प्रचार के लिए सोशल मीडिया

विद्वानों ने पहले इंटरनेट और हाल ही में सोशल मीडिया द्वारा राजनीतिक दलों को दिए गए समर्थन का आशावाद के साथ स्वागत किया है उनके उम्मीदवार. ऐसा इसलिए है क्योंकि इंटरनेट पारंपरिक मीडिया की तुलना में मतदाताओं के बीच जानकारी प्रसारित करने, स्व–प्रचार के लिए नए चैनल बनाने के अधिक अवसर प्रदान करता हैं डिजिटल संचार रणनीतियाँ राजनीतिक दल के नेतृत्व और आम जनता के बीच सीधे संचार का समर्थन करती हैं, जो उन्हें वोट देने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग आमतौर पर न केवल चुनावों के दौरान किया जाता है, बल्कि चुनाव के बाद के शासन के दौरान स्थायी अभियान के लिए भी किया जाता है चुनाव के बाद के शासन की अवधि में, इंटरनेट वास्तव में संगठन की क्षमता को सुविधाजनक बना सकता है और राजनीतिक दलों तथा मतदाताओं के बीच राय फैलाने के लिए अभिव्यक्ति के बहु माध्यमों की पेशकश कर सकता हैं। इंटरनेट के प्रभाव को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए राजनीति पर इंटरनेट ने वर्चुअल पॉलिटिकल सिस्टम मॉडल का सुझाव दिया। यहां फोकस इस बात पर है कि मध्यस्थ संगठन राज्य और

नागरिकों को कैसे जोड़ते हैं। इस ढांचे में, राजनीति पर इंटरनेट का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि राजनीतिक संस्थान इन कनेक्शनों को सुधारने और मजबूत करने के लिए इंटरनेट द्वारा पेश किए गए अवसरों से कैसे लाभान्वित होते हैं। अन्य अध्ययन व्यापक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से सोशल मीडिया और राजनीति के बीच संबंधों का पता लगाएं।

निष्कर्ष

संदर्भ की परवाह किए बिना, इंटरनेट को अक्सर मानव क्रिया को प्रभावित करने की क्षमता वाली एक तकनीक माना जाता है। तथापि, यह अपेक्षा हैं कि इंटरनेट राजनीतिक प्रक्रियाओं को मौलिक रूप से बदल देगा, सोशल मीडिया अपने तकनीकी–निर्धारक परिप्रेक्ष्य के कारण काफी हद तक विफल रही है। राजनीति पर इंटरनेट का प्रभाव किस प्रकार पड़ता है, इस पर शोध में यह गलत धारणा बनाई गई है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म स्थापित ढांचे में क्रांति ला देंगे लेकिन समय के साथ राजनीति टेलीग्राफ और रोटरी के लिए यह धारणा नई नहीं है प्रिंटिंग प्रेस, और हाल ही में रेडियो और टेलीविजन का भी समान उत्साह के साथ स्वागत किया गया। हालाँकि, नई प्रौद्योगिकियाँ उतनी निर्धारक नहीं हैं जितनी कि ऐसे तकनीकी–निर्धारक दृष्टिकोण में होती हैं बल्कि, समाज पर उनका प्रभाव उन सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों की विशेषताओं के अनुसार विकसित होता है जिनमें वे पनपते हैं।

संदर्भ सूची

1. बादाम, जी.ए., और वर्बा, एस. (1980)। नागरिक संस्कृति पर दोबारा गौर किया गया। बोस्टन, एमएरू लिटिल ब्राउन।
2. अल्वारेज, आर.एम. (1997)। सूचना एवं चुनाव. एन आर्बर, एमआईरू मिशिगन विश्वविद्यालय प्रेस।
3. नाई, बी.आर. (2003)। कौन सी तकनीक और कौन सा लोकतंत्र? एच. जेनकिंस, डी. थोरबर्न, और बी. सीवेल (सं.), डेमोक्रेसी एंड न्यू मीडिया (पीपी. 33–48) में। कैम्ब्रिज, एमएरू एमआईटी प्रेस।
4. बार्न्स, एस.एच., और कासे, एम. (1979)। राजनीतिक कार्रवाईरू पाँच पश्चिमी लोकतंत्रों में जन भागीदारी। बेवर्ली हिल्स, सीएरू सेज।
5. बरनौव, ई. (1966)। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रसारण का इतिहासरू खंड 1: बैबेल में एक टॉवर। 1933 तक। ऑक्सफोर्ड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. बेंकलर, वाई. (2006). नेटवर्क का धनरू कैसे सामाजिक उत्पादन बाजार और स्वतंत्रता को बदल देता है। न्यू हेवन, सीटीरू येल विश्वविद्यालय प्रेस।
7. बेनेट, डब्ल्यू.एल., और सेगरबर्ग, ए. (2012)। कनेक्टिव एक्शन का तक डिजिटल मीडिया और विवादास्पद राजनीति का निजीकरण। सूचना, संचार एवं समाज, 15(5), 739–768। http://doi-org/ 10–1080/1369118ग. 2012–670661 से लिया गया
8. बिम्बर, बी. (1998)। इंटरनेट और राजनीतिक लामबंदीरू 1996 के चुनाव सीजन पर शोध नोट। सामाजिक विज्ञान कंप्यूटर समीक्षा, 16(4), 391–401।
9. बिम्बर, बी. (2001)। अमेरिका में सूचना और राजनीतिक जुड़ावरू व्यक्तिगत स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावों की खोज। राजनीतिक अनुसंधान त्रैमासिक, 54(1), 53–67A http:/doi-org/10-1177/106591290105400103
10. बिम्बर, बी. (2003)। सूचना और अमेरिकी लोकतंत्ररू राजनीतिक शक्ति के विकास में प्रौद्योगिकी। कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

11. ब्लमलर, जे.जी., और कोलमैन, एस.जे. (2009)। इंटरनेट और लोकतांत्रिक नागरिकतारू सिद्धांत, व्यवहार और नीति। कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. ब्रायन्स, एल.सी., और वॉटनबर्ग, एम.पी. (1996)। अभियान मुद्दे का ज्ञान और महत्व टीवी विज्ञापनों, टीवी समाचारों और समाचार पत्रों से स्वागत की तुलना। अमेरिकन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 40(1), 172–193।
13. काल्डेरारो, ए. (2010)। इंटरनेट पर राजनीतिक स्थानों का अनुभवजन्य विश्लेषण परिवर्तन वैश्वीकरण आंदोलनों के संगठन में ई–मेलिंग सूचियों की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ई–पॉलिटिक्स, 1(1), 73–87।
14. काल्डेरारो, ए. (2014)। डिजिटल विभाजन से परे इंटरनेट राजनीति। ऑनलाइन राजनीतिक दलों पर एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य सिस्टम. बी. पैट्रुट्य और एम. पैट्रुट्य (सं.), सोशल मीडिया इन पॉलिटिक्स (पीपी. 3–17) में। न्यूयॉर्क, एनवाई स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग।
15. काल्डेरारो, ए. (2015)। उत्तर–सत्तावादी संदर्भों में इंटरनेट प्रशासन क्षमता निर्माण। म्यांमार में दूरसंचार सुधार और मानवाधिकार (एसएसआरएन स्कॉलरली पेपर नंबर आईडी 2686095)। रोचेस्टर, एनवाई सामाजिक विज्ञान अनुसंधान नेटवर्क। http://papers-ssrn-com/abstract¾2686095 से लिया गया
16. काल्डेरारो, ए., और कवाडा, ए. (2013)। नीति परिवर्तन के लिए ऑनलाइन सामूहिक कार्रवाई की चुनौतियाँ और अवसर। नीति एवं इंटरनेट, 5(1), 1–6- http://doi ls fy;k x;k- org/10-1002/poi3-19
17. कैममार्ट्स, बी. (2008)। राष्ट्र राज्य से परे इंटरनेट–मध्यस्थ भागीदारी। मैनचेस्टर मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस.
18. कास्टेल्स, एम., और से, ए. (2004)। इंटरनेट और राजनीतिक प्रक्रिया. एम. कास्टेल्स (सं.) में, द नेटवर्क सोसाइटीरू ए क्रॉस–कल्चरल पर्सपेक्टिव (पृ. 363–381)। नॉर्थम्प्टन, एमएरू एडवर्ड एल्गर प्रकाशन।
19. चौडविक, ए. (2013)। हाइब्रिड मीडिया सिस्टमरू राजनीति और सत्ता। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
20. चौडविक, ए., और हॉवर्ड, पी.एन. (सं.). (2009)। इंटरनेट राजनीति की रूटलेज हैंडबुक। लंदनरू रूटलेज.